OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

अर्की महल के भित्ति चित्रों में श्रीकृष्ण लीलाओं के चित्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

बरखा
शोधार्थी
ललित कला विभाग, स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ
ई-मेल:- neeraj2_5@yahoo.com

डॉ० पवनेन्द्र कुमार तिवारी
शोध निर्देशक, सहायक प्रोफेसर, चित्रकला विभाग
ललित कला विभागाध्यक्ष,
ललित कला संकाय, स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ

सारांश
हिमाचल प्रदेश सोलन जिले में स्थित अर्की महल, बाघल रियासत की एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक धरोहर है, जो अपनी भित्ति चित्रकला के लिए महत्वपूर्ण व विशेष रूप से प्रसिद्ध है। चहाँ की चित्रकला पहाड़ी शैली का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है, जिसमें धार्मिक, पौराणिक तथा लोक जीवन से जुड़े विविध विषयों का चित्रण मिलता है। विशेष रूप से कृष्ण लीलाओं से सम्बन्धित चित्र इस कला परम्परा का मुख्य आकर्षण है।
अर्की महल की भित्ति चित्रकला अपनी सौन्दर्यता, उत्कृष्ट गुणवत्ता, मौलिकता, पूर्णता और सूक्ष्मता के लिए प्रसिद्ध है। इन भित्ति चित्रों का विकास मुख्य रूप से 16वी शताब्दी के अन्त और 17वी शताब्दी के प्रारम्भ तथा 18वी शताब्दी के बीच हुआ। और यह कला बाघल के शाही दरबारों में फली-फूली और समृद्ध हुई। यह कला प्रद्धति राजपूत लघुचित्र शैली से प्रभावित है, जिसका उद्भव व विकास पंजाब की पहाड़ी रियासतों जैसे:- गुलेर, काँगड़ा, बाघल आदि में हुआ। राजपूत लघु चित्रकला शैली में प्रेम प्रसंगों, पौराणिक विषयों और धार्मिक कथाओं से सम्बन्धित विषयों को भी चित्रित किया गया है जो हिन्दू धर्म और वैष्णव धर्म व परम्परा से सम्बन्धित है।
इस विषय का उद्देश्य अर्की महल में चित्रित कृष्ण लीलाओं से सम्बन्धित चित्रों का विश्लेषण करना है जिससे उनके कलात्मक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक आयामों को समझने का प्रयास किया गया है। इन चित्रों से यह स्पष्ट होता है कि चित्रों में वैष्णव परम्परा, प्राकृतिक सौन्दर्य, भावात्मक अभिव्यक्ति और रंग-रचना का अद्भुत मिश्रण है। ये चित्र न केवल धार्मिक कथाओं को दर्शाते हैं, बल्कि हमारे समाज, संस्कृति और सौन्दर्य-बोध का भी प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करते हैं।

मुख्य शब्द : अर्की महल, बाघल राज्य, दीवान ए खास, कृष्ण द्वारा कंस का वध, कृष्ण गोपियाँ, कृष्ण स्वागत, गोवर्धन धारण, वकासुर वध, कृष्ण-राधा, बाँसुरी, चित्रकला, कालिया मर्दन, मीरा और हिरण।

प्रस्तावना
पहाड़ी चित्रकला में प्रसिद्ध सबसे पहले ज्ञात चित्रकार पंडित सेउ थे, जो गुलेर में बसे हुए थे। पहाड़ी शैली की उत्पत्ति गुलेर में मानी जाती है। सन् 1780 में जब गुलेर शैली अपने प्रारम्भिक चरण में थी, तब इसे कांगड़ा में लाया गया और तब से इसे कांगड़ा कलम के नाम से जाना जाता है। कुल्लू, गुलेर, चम्बा, मंडी, बिलासपुर, काँगड़ा और अर्की जैसे हिमालयी पहाड़ी राज्यों की चित्रकला को पहाड़ी कला' के नाम से जाना जाता है।

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

अर्की चित्रकला भारतीय कला के गौरवशाली इतिहास को दर्शाती है। यह विश्वास करना कठिन है कि हिमालय की शिवालिक पर्वतमाला का एक छोटा सा क्षेत्र, 'अर्की' इतने गौरवशाली अतीत का हिस्सा है। शिमला पहाड़ियों में स्थित बाघल राज्य की राजधानी अर्की, पहाड़ी भित्ति चित्रकला का भी एक प्रमुख केन्द्र था। बसोली चित्रकला शैली का अर्की शैली पर भी प्रभाव था। लेकिन जल्द ही कांगड़ी शैली को इसने अपना लिया था। अर्की का महल कला प्रेमियों के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण स्थान व धरोहर है। लगभग 1650 ई० में राजा सभा चन्द ने बाघल को राजधानी बनाया। इसके पश्चात् 1695 से 1700 ई० के बीच राजा पृथ्वी सिंह ने इस महल का निर्माण कार्य करवाया। महल को 'दीवन खाना' के नाम से जाना जाने वाला कक्ष का निर्माण राजा शिव सरन द्वारा 1830 से 1835 ई० के दौरान कराया गया। जबकि बाघल राजवंश के प्रमुख संरक्षक राजा किशन सिंह थे जिन्होंने 1840 से 1867 ई० तक शासन किया और दीवानखाने में भित्ति चित्रकला की शुरुआत करवायी।

यथार्थ में राजा किशन सिंह ने पूरे बाघल/अर्की क्षेत्र का योजनाबद्ध विकास किया। वह एक भविष्य की कल्पना करने वाले यानि दूरदर्शी शासक थे। उन्होंने बाघल को शिमला और बिलासपुर से जोड़ने के लिए घोड़ा और खच्चर मार्गों का निर्माण कार्य करवाया। इसके साथ-साथ उन्होंने देश के विभिन्न भागों से कारीगरों, चित्रकारों, विद्वानों और व्यापारियों को बाघल में यही पर रहने के लिए प्रोत्साहित किया तथा उन्हें कर मुक्त भूमि प्रदान की। 1830 से 1854 ई० का समय इस शोध के लिए विशेष रूप से चुना गया है। क्योंकि इस समय के दौरान कला के क्षेत्र में बहुत ही अद्भुत विकास देखने को मिलता है। उन्होंने ही प्रसिद्ध 'दीवनखाना' सभाघर की नीव रखी और दीवारों व छतों पर बहुत ही अद्भुत व विशाल भित्ति चित्रों का निर्माण करवाया। वास्तव में पूरे बाघल का विकास उनके द्वारा एक योजनाबद्ध तरीके से किया गया था। बाघल वंश के एक शासक द्वारा निर्मित दीवानखाना और दूसरे महान शासक राजा किशन सिंह द्वारा सजाया गया। यह भवन कला-जगत् में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। लगभग 180 साल पुराना यह दीवानखाना आज भी रंगों की जीवंतता, विषयों की विविधता और अपने बारीक कलात्मकता का एक अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करता है। भित्तियों पर बने ये भित्तिचित्र न सिर्फ धार्मिक सामाजिक और सजावटी विषयों को दिखाते हैं, बल्कि यह भी दिखाते हैं या बताते हैं कि उस समय के लोग किस प्रकार अपना मनोरंजन करते थे और उनकी भौगोलिक समझ कैसी थी। इन चित्रों का निर्माण और चित्रों की बनावट उनके डिज़ाइन दर्शकों में रहस्य और उत्सुकता की भावना को उत्पन्न करती है। अर्की महल के कलाकारों ने रंगों और आकारों के संतुलन के माध्यम से एकरूपता से बचते हुए अपनी कला को विशिष्ट बनाया।

'दीवानखाना' जिसको सभाघर भी कहा जाता है, का निर्माण राजा शिव सरन सिंह ने करवाया था। जो बाघल/अर्की के प्रमुख कला संरक्षकों में से एक माने जाते थे। यह विशाल और अद्भुत कक्ष विभिन्न शैलियों की भित्ति चित्रकला से सुसज्जित है, जिसमें बाघल, राजस्थानी, कांगड़ा, कुल्लू तथा यूरोपीय लघु चित्रकला शैली का सम्मिश्रण दिखाई देता है। इन भित्ति चित्रों के विषय भारतीय पौराणिक कथाओं से लेकर समकालीन यूरोपीय नगरों तक विस्तृत हैं। अर्की महल के भित्ति चित्रों में पौराणिक कथाऐं, युद्ध के दृश्य, महलों के दृश्य, लोककथाऐं, अलंकरण, पुष्पसज्जा से लेकर बहुत ही जटिल अलंकरण तक सबका बहुत ही सौन्दर्यपूर्ण चित्रण किया गया है। ये सभी चित्र अर्की महल की समृद्ध कलात्मक परम्परा के साक्षात प्रमाण हैं। मुख्य रूप से स्त्रियों की चित्रकला और फूलों के चित्रों में गुलेर शैली का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इसके अलावा, राग-रागिनियों, पशु-पक्षियों, कृष्ण और गोपियों के संग रासलीला, कृष्ण-राधा प्रेम, युद्ध दृश्य और कलात्मक चित्रण भी इन भित्ति चित्रों में शामिल हैं।

इन सभी भित्ति चित्रों को बनाने व उनका निर्माण करने वाले बहुत से कलाकार मुगल दरबार से निकलकार यहाँ अर्की आये थे, मुगल दरबार में कला और कलाकारों के लिए अनुकूल वातावरण नही रह गया था। पहाड़ी कला के लिए यह परिवर्तन कला के लिए वरदान सिद्ध हुआ और इससे हिन्दू धर्म की भारतीय समाज की अभिव्यक्ति को कला में नई शक्ति व ऊर्जा प्राप्त हुई। अर्की महल मुख्य रूप से राजस्थानी कला में निर्मित है। दीवानखाना का कक्ष जहाँ राजा दरबार लगाते थे। यह कक्ष दो भागों में विभाजित है और अपनी रंग-योजना के कारण यह बहुत आकर्षक लगता है। दीवारों पर की गई बारीक प्रभावशाली और आकर्षित चित्रकारी कला प्रेमियों को मन्त्रमुग्ध कर देती है। अर्की महल की भित्ति चित्रकला और स्थापत्य कला ने बाघल राज्य की सांस्कृतिक विरासत पर अपनी अद्भुत व अमिट छाप छोडती है। चित्रकला की एक प्रमुख शैली के रूप में बाघल/अर्की का नाम कला जगत में प्रसिद्धि प्राप्त है। भारतीय पौराणिक कथायें, महाभारत, रामायण, समकालीन जीवन, दरबार के दृश्य आखेट के दृश्य, विदेशी बंदरगाहों आदि का चित्रण इस महल की भित्तियों पर प्रभावशाली ढंग से किया गया है।

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

दीवानखाना की वास्तुकला में मध्यकालीन प्रभाव के साथ-साथ मुगल और राजस्थानी शैली का समन्वय देखने को मिलता है। गुम्बद, स्तम्भ, मेहराबें और शिखर सजावट की बहुत सम्भावनायें प्रस्तुत करते हैं, जबकि फूलों के अलंकरण बेलबूटो कलाकारों को अपनी कलात्मकता व रचनात्मकता को और उन्नत स्तर तक ले जाने के लिए प्रेरित करती है। अर्की/बाघल की कला ने मुगल और राजस्थानी शैलियों के तत्वों को आत्मसात कर स्वयं को समृद्ध और प्रभावशाली बनाया। पहाड़ भारत भूमि का अत्यन्त प्राचीन भूखण्ड है। यह भूमि आरम्भ से ही कला जननी, सौन्दर्य जननी तथा संस्कृति जननी रही है। मुगल शैली की पृष्ठभूमि पर तथा राजपूत शैली की लघुचित्रकला शैली की चित्रकला के आयामों को लेकर पर्वतीय रियासतों में जिस चित्रशैली का विकास हुआ उसे 'पहाड़ी चित्रकला' का नाम दिया जाता है। पहाड़ी कला को उसकी सादगी और ताजगी के कारण समकालीन मुगलशैली से अलग पहचाना जा सकता है, जबकि उसकी काव्यात्मकता उसे राजस्थानी चित्रकला से विशिष्ट बनाती है। निस्संदेह पहाड़ी कला ने इन दोनों प्रमुख शैलियों से आगे बढ़कर एक उच्च स्थान प्राप्त किया है और विश्व स्तर पर भारतीय कला को एक महत्वपूर्ण स्थान व सम्मान दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

पहाड़ी भित्ति चित्रकला के केन्द्र के रूप में बाघल/अर्की की कला और स्थापत्य ने अपना महत्वपूर्ण स्थान व योगदान स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अर्की महल के अधिकतर चित्र दीवानखाने में स्थित हैं, जहाँ राजा राज्य के कार्यों के लिए अपने दरबारियों के साथ सभा में बैठते थे। यह विशाल सभाग्रह कक्ष अठारह भागों में बांटा हुआ है और प्रत्येक भाग में दो या तीन चित्र पैनल बनाये गये हैं। अधिकतर भित्ति चित्रों का विषय व प्रेरणा वैष्णव धर्म से ली गई हैं। दीवानखाना के कक्ष को रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों की कथाओं से सुसज्जित किया गया है। सभा कक्ष की रंगीन छत पर लाल और सफेद रंगों के पुष्प आकृतियों व बेलों के जाल द्वारा बनाया गया है जो मुगल महलों की श्रेष्ठ कला की याद दिलाता है। खुले आंगन की ओर मुख किए गए विभिन्न स्तम्भों, मेहराबों पर ब्रिटिश और यूरोपीय विषयों पर चित्रण देखने को मिलता है।

अर्की महल की सजावट व योजना में हमें राजपूताना और मुगल शैली का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है, जो इसे अत्यन्त मनोहारी व प्रभावशाली बनाता है। इन अद्भुत कलाकृतियों को बनाने वाले चित्रकार मुगल दरबार की अप्रत्याशित नीति के कारण वहाँ से निकलकर पहाड़ी क्षेत्रों में आये, जहाँ उन्हें उदार संरक्षक मिले और उन्होंने अपनी रचनात्मकता को पूरी तरह विकसित किया। मुगल शैली का प्रभाव चित्रों की सूक्ष्मता, आकृतियों की संरचना और प्राकृतिक तत्वों जैसे वृक्षों में दिखाई देता है। अर्की महल की दीवारों व छतों पर जो भित्ति चित्र बने हैं वे जीवंत, स्पष्ट और लोककला की सरलता से युक्त हैं, साथ ही इनमें बाहरी शैलियों और दृश्य-भ्रम को अपनाने की प्रवृत्ति भी देखी जा सकती है। अर्की महल की कला भारतीय मैदानों, विशेषकर राजस्थान की पौराणिक परम्पराओं को दर्शाती है, जिन्हें मुगल शैली के साथ सम्मिलित किया गया है। युद्ध के दृश्य यहाँ विशेष रूप से ऐतिहासिक और सत्य तथ्यों पर आधारित हैं, और ये अर्की/बाघल की चित्रकला के प्रमुख विषयों में से एक हैं। विभिन्न बंदरगाहों और नगरों के चित्रण भी इस कला की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। इन सभी विषयों पर बने भित्ति चित्रों को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। अर्की की भित्ति चित्रकला पहाड़ी शैली का हिस्सा है, जो हिमालयी राज्यों में विकसित हुई और जिसमें कृष्ण, राधा तथा वैष्णव विषयों का विशेष स्थान है। इन चित्रों में पौराणिक कथायें, रामायण, महाभारत के प्रसंग तथा कृष्ण लीलाएँ प्रमुख रूप से दर्शायी गयी हैं। कृष्ण लीलाएँ भारतीय चित्रकला में अत्यन्त लोकप्रिय विषय रही है, क्योंकि वे प्रेम, भक्ति, समर्पण, त्याग, नैतिकता और मानव की भावनाओं का प्रतीक है। अर्की महल के चित्रों में इन लीलाओं का चित्रण अत्यन्त जीवंत, कलात्मक और भावपूर्ण रूप में किया गया है।

श्रीकृष्ण लीलाओं पर आधारित भित्ति चित्रकला

हिमाचल प्रदेश की पहाड़ी चित्रकला भारतीय कला का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। पहाड़ी शैली के अन्तर्गत बाघल/अर्की क्षेत्र की चित्रकला अपनी उत्कृष्ट कलात्मकता, रंग-संयोजन, धार्मिक, पौराणिक विषय-वस्तु तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के साथ विकसित होकर अपना विशेष महत्व रखती है। अर्की महल, जो बाघल रियासत की सांस्कृतिक धरोहर के रूप में जाना जाता है, वह अपनी भित्ति चित्र परम्परा के लिए प्रसिद्ध है। महल के दीवानखाना तथा अन्य कक्षों में बने भित्ति चित्रों में पौराणिक कथायें धार्मिक कथायें तथा विशेष रूप से कृष्ण लीलाओं और उनके जीवन से सम्बन्धित लीलाओं का सजीव चित्रण मिलता है। अर्की महल में चित्रित कृष्ण लीलाओं से सम्बन्धि विषय का अध्ययन किया गया है। अर्की महल में कृष्ण की जीवन से सम्बन्धित भित्ति चित्रण हुआ है। महाभारत में श्री विष्णु जी के अवतार श्री कृष्ण की कथाओं व लीलाओं का विस्तार से वर्णन किया गया है। महाभारत न सिर्फ एक धार्मिक ग्रन्थ है, अपितु हिन्दू समाज के लिए एक नैतिकता और दर्शन का अपार समृद्ध स्रोत भी है।

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

हिन्दु धर्म जीवन के वास्तविक मूल्य को समझने पर बल देता है। महाभारत विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य माना जाता है, जिसमें 30,000 से अधिक श्लोक हैं। यह महाकाव्य अनेक अध्यायों में विभाजित है। इसमें बहुत सी लघु कथाएँ, नैतिक प्रसंग, लीलाएँ आदि सम्मिलित हैं, जहाँ धर्म और कर्तव्य के अनुसार निर्णय लिये जाते हैं। इन अध्यायों में "भागवद्गीता" विशेष रूप से प्रसिद्ध है, जिसमें भगवान श्री कृष्ण युद्ध से पूर्व अर्जुन को गीता का उपदेश देकर धर्म और कर्तव्य को समझाते हैं।

अर्की महल में कृष्ण लीलाओं या कृष्ण की जीवन से सम्बन्धित चित्रण द्वारा विशेष उल्लेख किया गया है, जिसमें उनके कलात्मक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक आयामों को समझने का प्रयास किया गया है। इन चित्रों में वैष्णव भक्ति, प्रकृति सौन्दर्य भावात्मक अभिव्यक्ति और रंग-योजना का अद्भुत मिलन है। ये भित्ति चित्र न केवल धार्मिक कथाओं को दर्शाते हैं, बल्कि तत्कालीन समाज, संस्कृति और सौन्दर्य का भी प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करते हैं। भगवान श्री कृष्ण भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना के प्रमुख केन्द्र रहे हैं। उनके जीवन से जुड़े प्रसंग-बाल लीलाओं, रास लीलाओं, गोवर्धन धारण, गोपियों संग वन में कृष्ण, गोपियों संग नृत्य, श्रीकृष्ण-राधा संग वन में घूमते हुए, हिरण को घास खिलाती मीरा, श्रीकृष्ण का स्वागत, कृष्ण द्वारा कंस वध, बकासुर का वध, आदि चित्रण कलाकारों के लिए हमेशा प्रेरणा का स्रोत रहे हैं। अर्की महल की भित्ति चित्रकला में कृष्ण लीलाओं का चित्रण केवल आध्यात्मिक विषय नही, बल्कि कलात्मक अभिव्यक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है।

चित्र (i) गोपियों संग वन में श्रीकृष्ण

यह चित्र अर्की महल के 'दीवानखाना' में स्थित भित्ति चित्रकला का एक अत्यन्त आकर्षक और भावनात्मकता का उदाहरण है। यह चित्र श्रीकृष्ण की गोपियों संग रास-लीला का उनके दिव्य और आध्यात्मिक सम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। भारतीय कला परम्परा में कृष्ण और गोपियों के प्रसंग केवल प्रेम का चित्रण नही करते, अपितु आत्मा और परमात्मा के मिलन के प्रतीक माने जाते हैं। इस चित्र में भी वही अद्भुत प्रेम व आध्यात्मिक भाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

चित्र के माध्यम से श्रीकृष्ण को प्रमुख रूप से दर्शाया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि चित्र में मुख्य पात्र या केन्द वही है। उनकी आकृति अन्य पात्रों की तुलना में अत्यधिक प्रभावशाली और मोहक दिखाई देती है, जिससे चित्रकार ने उनके दिव्य स्वरूप और महत्व को उभारने का प्रयास किया है। कृष्ण के दोनों तरफ गोपियाँ चित्रित हैं, जो उनके प्रति प्रेम, श्रद्धा और समर्पण की भावना को व्यक्त करता है। गोपियों की भाव-भंगिमाएँ और उनके खड़े होने का ढंग ऐसा प्रतीत होता है मानो वे कृष्ण के साथ किसी मधुर संवाद अथवा रास के वातावरण में प्रकट हों। चित्र के पृष्ठ भाग में पेड़ों का चित्रण किया गया है। जो दृश्य को बहुत ही अद्भुत और सुन्दर प्राकृतिक वातावरण प्रदान करता है। भारतीय चित्रकला में पेड़/वृक्ष केवल सजावटी तत्व नही होते, बल्कि वे प्रकृति जीवन और सौन्दर्य के प्रतीक माने जाते हैं। यहाँ पेड़ों की मौजूदगी वृंदावन के वातावरण की अनुभूति कराती है, जहाँ श्रीकृष्ण की अधिकतर लीलाएँ सम्पन्न हुई थी। कलाकार ने सीमित स्थान में भी प्रकृति और पात्रों के बीच संतुलन बनाये रखने का प्रयास किया है।

चित्र के चारो तरफ बनी सजावटी बार्डर इसकी कलात्मक सुन्दरता को अधिक बढ़ाती है। बार्डर पर बनाये फूलों और ज्यामितीय आकारों द्वारा अलंकरण भित्ति चित्रकला की प्रमुख विशेषता को दर्शाते हैं। यह सजावट केवल चित्रों को सजाने या भरने का काम नही करती, अपितु उसकी भव्यता और शाही रूप को भी व्यक्त करती है। क्योंकि यह अर्की महल के दीवानखाना में चित्रित है, इसलिए इसकी सजावटी शैली राजसी ठांठ व उसके वातावरण के अनुकूल दिखाई देती है। रंगों की नजर से चित्र में हल्के, हरे, भूरे और हल्के व सौम्य रंगों का प्रयोग दिखाई पड़ता है। इन रंगों का मिलन चित्र को शान्त, सौम्य और आध्यात्मिक वातावरण प्रदान करता है। समय के साथ-साथ या उसके प्रभाव के कारण कुछ रंग फीके अवश्य हो गए हैं, फिर भी इन भित्ति चित्रों की भावनाएँ और सौन्दर्य आज भी अर्की महल में दिखाई देते हैं। चित्रकार ने रंगों के द्वारा चित्र में भक्ति, प्रेम, शान्ति और मोहक व मधुर वातावरण का निर्माण किया है।

चित्रकार ने कृष्ण के चेहरे पर शान्त, आकर्षक और आलौकिक दिखाये हैं उनके सिर पर मुकुट, मोरपंख तथा अलंकृत वेशभूषा उनके दिव्य स्वरूप को प्रकट करती है। चित्रकार ने गोपियों के वस्त्रों और आभूषणों के चित्रण में अत्यन्त सूक्ष्मता दिखाई है। पीले, लाल, हरे और केसरिया रंगों का संतुलित प्रयोग चित्र को जीवंतता प्रदान करता है। पहाड़ी शैली के अनुरूप स्त्रियों की लम्बी आँखें, गोलाकार मुखाकृति, नुकीली नाक तथा पतला शरीर संरचना स्पष्ट दिखाई देती है। कलाकारों की दृष्टि से यह भित्ति चित्र परमात्मा और जीव के मिलन का प्रतीक है। वैष्णव धर्म में गोपियों को

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

जीवात्मा तथा कृष्ण को परमात्मा माना गया है। अतः यह दृश्य केवल लौकिक प्रेम का नही बल्कि आध्यात्मिक समर्पण और भक्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

चित्र संख्या (1) गोपियों संग वन में श्रीकृष्ण

चित्र (ii) हिरण को घास खिलाती मीरा

यह चित्र सन्त मीरा की आध्यात्मिक चेतना, करुणा और प्रकृति के प्रति एक अद्भुत उदाहरण है। मीरा अपने भारतीय भक्ति आंदोलन की महान सन्त थी, जिन्होंने अपना पूरा जीवन श्रीकृष्ण की भक्ति में समर्पित कर दिया था। इस चित्र में मीरा को एक हिरण को घास खिलाते हुए दिखाया गया है। जिससे उनका दयामयी और सौम्य रूप स्पष्ट दिखायी देता है।

इस चित्र में मीरा को मुख्य रूप से चित्रित किया गया है। वे पारम्परिक पहाड़ी व राजस्थानी शैली की वेशभूषा में दिखाई देती हैं। उनके वस्त्रों पर बहुत ही बारीकी से अलंकरण तथा राजस्थानी बंधेज बिन्दु के अनुसार सजाया व अंकन कर चित्र को और अधिक कलात्मक सुन्दरता को बढ़ाता है। मीरा की शारीरिक भाव-भंगिमा बहुत ही शान्त, सरल व ममतामयी करूणा से भरी दिखाई गयी है। उनका एक हाथ हिरण की ओर बढ़ता हुआ दिखाई देता है, माना के हिरण को प्रेमपूर्वक घास खिला रही हों। इस शारीरिक भाव या मुद्रा में चित्रकार ने प्रेम व करूणा के भाव को बहुत ही प्रभावशाली तरीके से व्यक्त किया है।

इस चित्र में सामने एक हिरण दिखाया गया है, जो मीरा की ओर आकर्षित होकर उसे निश्चल प्रेम से देखता दिखाई देता है। हिरण भारतीय कला और साहित्य में सरलता, कोमलता और प्राकृतिक निर्मलता का प्रतीक माना जाता है। हिरन का मीरा के प्रति निडर होकर उसके बिल्कुल पास दिखाया गया है, जो कि मीरा के पास उसके कोमल हृदय, व्यक्तिगत प्रेम और शान्ति स्वरूप से परिपूर्ण था। चित्रकार ने मानव व पशु के बीच आत्मीय संबंध को अधिक संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है।

चित्र के बांये भाग में एक वृक्ष को दिखाया गया या चित्रित किया गया है। जो प्राकृतिक दृश्य को चित्र में दिखायी देता है व प्रकृति की सुन्दरता और

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

चित्रण में जीवंत वातावरण को दर्शाता है। जिससे हमें यह प्रतीत होता है कि चित्र कही प्राकृतिक स्थान पर दर्शाया गया है। प्रकृति के इन तत्वों से चित्र में शान्ति, संतुलन की अनुभूति होती है।

चित्र में दाहिने तरफ एक घर या महलनुमा भवन दिखायी देता है। उसकी मेहराबें और ऊपरी भाग की संरचना राजसी स्थापत्य शैली की ओर आकर्षित करती है। इससे यह प्रतीत होता है कि चित्रकार ने प्राकृतिक व धार्मिक विषयों के साथ-साथ शाही परिवेश को भी चित्र में शामिल करने का प्रयत्न किया है। महल या भवन की स्थिति चित्र को केवल प्राकृतिक दृश्य तक सीमित नही रखती, बल्कि ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ भी प्रदान करती है।

चित्र में जो रंग प्रयोग किये गये हैं वह अत्यन्त कोमल और जीवंत हैं। हल्के, पीले, हरे, भूरे, महरून रंगों का उपयोग प्राकृतिक वातावरण के साथ संतुलन व तालमेल स्थापित करता है। हिरन को बहुत ही कोमल रेखाओं के माध्यम से बनाया गया है। जिससे दृश्य में और भी सहजता और जीवंतता आती है। चित्र के निचले भाग में फूलों की बेल व पट्टियों का प्रयोग किया गया है, जो इस चित्र भित्ति की ओर अधिक शोभायमान बनाता है, समय के प्रभाव के कारण रंग कुछ धूमिल जरूर हो गये हैं, फिर भी चित्र की मूल भावनाएँ और उसकी कलात्मकता स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।

कला की दृष्टि से देखें तो यह चित्र पहाड़ी भित्ति चित्रकला की महत्वपूर्ण विशेषताओं को प्रदर्शित करता है, चित्र में रेखाओं की सरलता, भावों की प्राथमिकता और प्राकृतिक तत्व के भाव आदि संतुलित चित्रण को महत्व दिया गया है। चित्रकार ने बहुत ही जटिल स्थानों पर भावात्मक अभिव्यक्ति को सर्वप्रथम प्रमुखता दी है, जिससे चित्र देखने वाले कला प्रेमियों के मन में सहज ही संवेदना उत्पन्न करता है। यह कहना गलत नही होगा कि "हिरन को घास खिलाती मीरा" चित्रण में न केवल एक दृश्यात्मक प्रस्तुति नही है, बल्कि करूणा, भक्ति, प्रेम, मानव और प्रकृति के मध्य जो मधुर सम्बन्ध है तथा सांस्कृतिक मूल्यों का एक अद्भुत व उत्कृष्ट उदाहरण है। यह भित्ति चित्र अर्की महल की दीवारों पर की गई चित्रकला की शाही परम्परा और भाव प्रधान शैली को अधिक प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत करता है।

चित्र संख्या (2) हिरण को घास खिलाती मीरा

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

चित्र (iii) गोवर्धन पर्वत धारण किये हुए श्रीकृष्ण

यह चित्र अर्की महल के दीवानखाना में स्थित भित्ति चित्रकला का एक बहुत ही महत्वपूर्ण धार्मिक और पौराणिक दृश्य प्रस्तुत करता है। इसमें भगवान श्रीकृष्ण की सभी प्रसिद्ध लीलाओं में से एक गोवर्धन धारण प्रसंग को चित्रित किया गया है। इसमें श्रीकृष्ण अपनी सबसे छोटी उंगली पर गोवर्धन पर्वत को धारण किये हुए दिखाया गया है। भारतीय पौराणिक कथाओं के अनुसार जब इन्द्रदेव ब्रजवासियों से रुष्ट हो गये थे और क्रोधित होकर वृंदावन में प्रचंड वर्षा आरम्भ कर दी थी, जब सब जगह हाहाकार मच गया था। तब श्रीकृष्ण ने सम्पूर्ण ब्रज वासियों और पशुओं की रक्षा करने के लिए अपनी कनिष्क अंगुली पर गोवर्धन पर्वत धारण करके सभी की रक्षा करी व उनको आश्रय प्रदान किया।

चित्र में पर्वत के नीचे शरण लेते ब्रजवासी, गोपियाँ, ग्वाले, गायें और अन्य पशु दिखाई देते हैं। और मुख्य पात्र में श्रीकृष्ण मध्य में गोवर्धन पर्वत धारण किये गये दिखाया गया है। यह घटना केवल एक चमत्कारिक कथा न होकर, बल्कि ईश्वर के अपार प्रेम-भावना, अपने भक्तों के प्रति प्रेम, संरक्षण और धर्म की स्थापना का प्रतीक मानी जाती है। यह चित्र उसी अद्भुत और दिव्य प्रसंग को भावपूर्ण शैली में प्रकट करता है।

चित्र में श्रीकृष्ण के स्वरूप को बहुत ही शान्त, स्थिर, कोमल और आत्मविश्वास से युक्त प्रतीत होता है। इतने कठिन समय में भी उनके चेहरे पर किसी प्रकार की कोई शिकन, भय या परेशानी, चिंता दिखायी नही देती, जो उनके ईश्वरीय और अद्भुत स्वरूप की शक्ति को प्रकट करता है। चित्र में पर्वत के ऊपर घने काले बादलों और वर्षा का संकेत मिलता है। आकाश में बादलों का चित्रण उस प्राकृतिक संकट को दर्शाता है, जिसने सभी ब्रजवासियों और ब्रजभूमि को प्रभावित किया था। कलाकार ने सीमित स्थान और साधारण रेखाओं के बावजूद वातावरण में संकट और आश्रय दोनों के भावों को व्यक्त किया है। चित्र में चारों तरफ बने फूलों के द्वारा अलंकरण व सजावट के लिए रेखाओं के द्वारा चित्र को ओर भी अधिक कलात्मक सुन्दरता प्रदान की गयी है।

रंगों की योजना के द्वारा चित्र में लाल, काले, भूरे, पीले, तथा हल्के रंगों का संयोजन दिखायी देता है। समय के कारण चित्र धूमिल हो चुके हैं परन्तु आज भी उनका महत्व पूर्णरूप से आकर्षण का केन्द है। जो सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है। इस प्रकार "गोवर्धन पर्वत धारण किये हुए श्रीकृष्ण" यह चित्र केवल पौराणिक घटना का चित्रण ही नही बल्कि यह विश्वास, संरक्षण, भक्ति और ईश्वर के प्रति हमारा विश्वास प्रकट करता है।

चित्र संख्या (3) गोवर्धन पर्वत धारण किये हुए श्रीकृष्ण

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

चित्र (iv) श्रीकृष्ण द्वारा बकासुर का वध

मेहराब के दांई ओर कलाकार ने बकासुर वध का दृश्य बनाया हुआ है। बकासुर वध भी श्रीकृष्ण लीलाओं का बहुत ही महत्वपूर्ण प्रसंग है। जिसमें भगवान कृष्ण राक्षस बकासुर का वध करते हुए दिखाये गये हैं। बकासुर एक विशाल पक्षी के रूप में राजा कंस द्वारा गोकुल में श्रीकृष्ण को मारने के लिए भेजा गया था और उसको देखकर सभी ब्रजवासी भयभीत हुए थे। उसने अपनी बड़ी चोंच खोलकर श्रीकृष्ण को निगल लिया, परन्तु कुछ ही पल बाद उसने उन्हें बाहर निकाल दिया। तब श्रीकृष्ण ने अपनी शक्ति से बकासुर पक्षी की चोंच को फाड़ दिया। और उसका वध कर दिया। इस चित्र में गायें और ग्वाले भी दर्शाये गये हैं। इस भित्ति चित्रण में लाल, सफेद, भूरे, संतरी और पीले रंगों का प्रयोग किया गया है। चित्र का अनुपात, सूक्ष्म रेखाकंन कलाकारों की उच्च कोटि की दक्षता को दर्शाता हैं। यह चित्र अच्छाई की बुराई पर विजय का प्रतीक माना जाता है।

चित्र संख्या (4) श्रीकृष्ण द्वारा बकासुर का वध

चित्र (v) श्रीकृष्ण द्वारा कंस वध

यह चित्र श्रीकृष्ण के जीवन की एक महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक माना जाता है। इसमें भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अत्याचारी राजा कंस के वध के प्रसंग का चित्रण किया गया है। भारतीय पौराणिक कथाओं के अनुसार कंस मथुरा का बहुत ही क्रूर और अत्याचारी शासक था, जिसने अपनी सत्ता के बल पर प्रजा को अनेकों कष्ट दिये थे। और यह भविष्यवाणी हुई थी कि उनकी बहन देवकी का आठवाँ पुत्र उसकी मौत का कारण बनेगा व उसका वध करेगा। उसी भविष्यवाणी को पूर्ण करने के लिए श्रीकृष्ण ने अंततः कंस का वध कर दिया था। यह चित्र उसी पौराणिक, ऐतिहासिक और धार्मिक घटना का कलात्मक स्वरूप है।

चित्रण में मध्य में श्रीकृष्ण को अत्यन्त प्रभावशाली, वीर और शक्तिशाली स्वरूप में चित्रित किया गया है। चारों ओर संघर्ष का वातावरण दिखाई देता है। चित्रकार ने श्रीकृष्ण के स्वरूप को चित्र का मुख्य केन्द्र बनाया है। जिससे सभी कला प्रेमियों व दर्शकों का ध्यान तुरन्त उनकी ओर आकर्षित हो। उनके सिर के पीछे वाला आभामण्डल उनके दिव्य स्वरूप व तेज को दर्शाता है। उनका यह स्वरूप पूरे चित्र में शक्ति और न्याय का प्रतीक रखकर बनाया गया है।

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

कंस को पराजय की मुद्रा में जमीन पर गिरा हुआ दिखाया गया है, साथ ही अन्य पहलवान व सैनिक नीचे गिरे हुए दिखाई देते हैं। यह दृश्य श्रीकृष्ण की विजय और कंस की पराजय का संकेत देता है। चित्र की पृष्ठभूमि में राजमहल, रंगभूमि का चित्रण दिखाई देता है। ऊँची-ऊँची दीवारें, भवन, मेहराबदार द्वार आदि स्थापत्य शैली को दर्शातें हैं, चित्र के ऊपरी भाग में अलंकृत मेहराब और भी सुन्दर दिखाई पड़ते हैं जिन पर फूलों और बेलों द्वारा चित्रण किया गया है। और उस समय की भित्ति कला शैली को प्रदर्शित करता है। इस चित्र को देखकर राजसी भव्यता दिखाई पड़ती है। चित्र में लाल और गहरे रंगों का प्रयोग युद्ध की गम्भीरता और तनाव को दर्शाता है।

चित्रकार की दृष्टि से यह चित्र पहाड़ी भित्ति चित्रकला की शैली का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। इसमें सरल रेखांकन, भावपूर्ण प्रस्तुति और धार्मिक कथाओं पर प्रभावशाली चित्रण देखने को मिलता है। चित्रकार ने छोटी से छोटी बातों का ध्यान चित्रण में रखा है। इस प्रकार "श्रीकृष्ण द्वारा कंस का वध" चित्रण केवल एक धार्मिक या पौराणिक घटना नही बल्कि यह धर्म की विजय अन्याय का अन्त और सत्य की स्थापना का प्रतीक है। यह चित्र अर्की महल की समृद्ध भित्ति चित्रकला, धार्मिक परम्परा और सांस्कृतिक विरासत का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

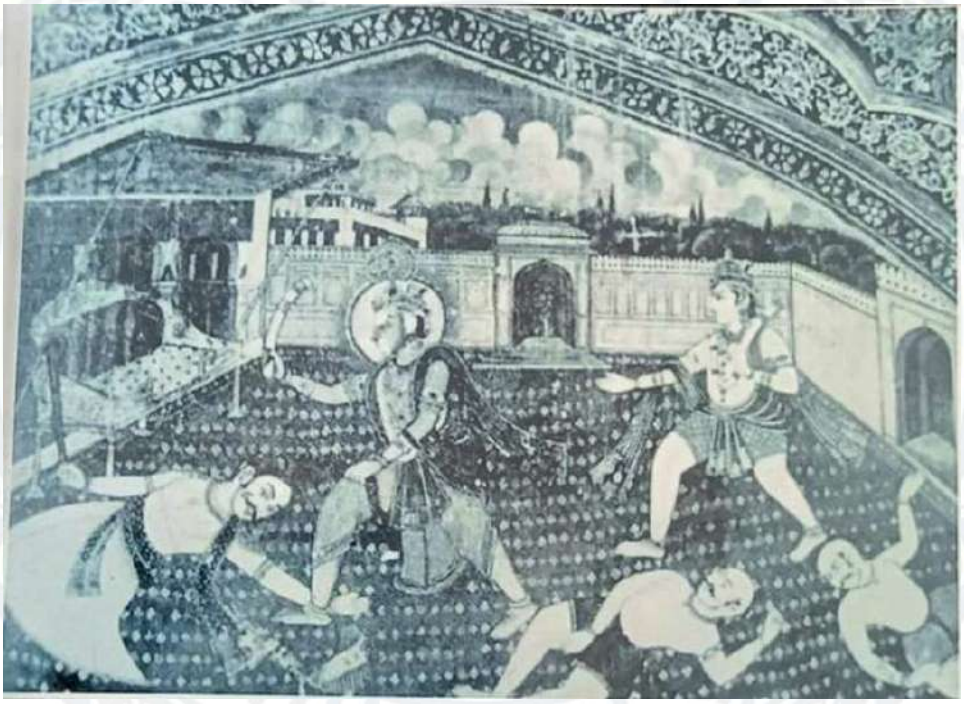

चित्र संख्या (5) श्रीकृष्ण द्वारा कंस का वध

चित्र (vi) श्रीकृष्ण का स्वागत

इस चित्र में कलाकार ने श्रीकृष्ण के स्वागत दृश्य को चित्रित किया है। जिसमें उनके प्रति मान-सम्मान, श्रृद्धा-भाव, प्रेम के भाव को अत्यन्त भव्य और सुन्दर ढंग से दर्शाया गया है। भारतीय रीति-रिवाज के अनुसार अतिथि, देवता, गुरु अथवा पूजनीय व्यक्तियों के स्वागत करने की परम्परा आरम्भ से चली आ रही है। इस चित्रण में यह परम्परा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। चित्र के बांए भाग में श्रीकृष्ण को मुख्य पात्र के रूप में बलराम संग दिखाया गया है। उनका वर्ण श्याम रंग में चित्रित किया गया है, भगवान श्रीकृष्ण की पहचान को दर्शाता है। उनके सिर पर मुकुट सुशोभित है जो उनके राजसी स्वरूप को दर्शाता है। उनके राजसी वेशभूषा व अलंकृत वस्त्र धारण किये गए हैं। उनके गले में सफेद फूलों की माला दिखाई देती है, जो उनके सम्मान और आदर का प्रतीक है। श्रीकृष्ण शान्त, गरिमामयी, सौम्य रूप में दिखाई देते हैं जिससे उनके दिव्य स्वरूप का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

चित्र के मध्य भाग में एक स्त्री को दर्शाया गया है। व उनके पीछे और अन्य स्त्रियाँ भी दिखाई देती हैं। जो पुष्पमाला हाथ में लिये हुए स्वागत के लिए खड़ी हैं। और प्रतिक्षा का इन्तजार करते हुए दिखाया गया है। मध्य में जो स्त्री है वह श्रीकृष्ण का स्वागत करती हुई दिखाई देती है। उसका हाथ कृष्ण के मस्तक की ओर बढ़ा हुआ है, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि वह तिलक लगा रही है और स्वागत की परम्परा निभा रही है। हमारी भारतीय संस्कृति में तिलक लगाना शुभता, मंगल-कामना और सम्मान का प्रतीक माना जाता है। चित्रकार ने इस स्वागत दृश्य के द्वारा भारतीय परम्परा को बहुत ही भावपूर्ण ढंग से व्यक्त करके दर्शाया है। सभी पात्रों की मुद्राएँ उत्साहपूर्ण, आनन्द, श्रृद्ध और भावों को चित्रित करती हैं।

चित्र में रंगों का संयोजन दृश्य को जीवंत और प्रभावशाली बनाता है। चित्रकार ने स्थापत्य, अलंकरण और वस्त्रों पर बहुत ही बारीकी से चित्रण किया है। सजावटी रूपांकन तथा पारम्परिक वेशभूषा स्थानीय सांस्कृतिक तत्वों को स्पष्ट करती है। यह चित्र केवल प्रेम कथा नही बल्कि भक्ति साहित्य में कथित आत्मा और परमात्मा के मिलन का प्रतीकात्मक रूप है।

चित्र संख्या (6) श्रीकृष्ण का स्वागत

चित्र (vii) श्रीकृष्ण राधा संग वन में घूमते हुए

इस चित्र में अत्यन्त मनोहर और भावनात्मक प्रसंग का उदाहरण है। श्रीकृष्ण और राधा को वन में साथ-साथ विचरण करते हुए दर्शाया गया है। यह दृश्य केवल एक साधारण घूमने का चित्रण नही बल्कि प्रेम, भक्ति, एक दूसरे के प्रति समर्पण और प्रकृति के मधुर समन्वय का प्रतीकात्मक प्रस्तुतीकरण है। भारतीय चित्रकला में राधा-कृष्ण के प्रेम-प्रसंग को आध्यात्मिक प्रेम तथा आत्मा और परमात्मा के मिलन का प्रतीक माने जाते हैं, और इस चित्र में उसी भावपूर्ण प्रेम को अत्यन्त सुन्दर ढंग से दर्शाया गया है।

चित्र में राधा और कृष्ण को प्राकृतिक वातावरण में एक साथ घूमते हुए दिखाया गया है। चित्रकार ने प्रकृति को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान दिया है। वृक्ष, पत्तियों, बादल, धरती, गाँये, पुष्प और पक्षी को हरित पृष्ठभूमि के दृश्य को सौन्दर्य पूर्वक और जीवंत बनाय है। चित्र में दो गाँयों का चित्रण कृष्ण के गोपाल रूप की ओर संकेत करता है। श्रीकृष्ण के स्वरूप को बहुत ही आकर्षक वस्त्रों, मुकुट और आभूषणों से सजाया गया है। जबकि राधाजी को कोमलता और सौन्दर्य के प्रतीक रूप में चित्रित किया गया है। दोनों के मध्य आपसी प्रेम-भाव, समर्पण की भावना, दृष्टि का मिलना

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

और निकटता, भावनात्मक गहराई उत्पन्न कीरती है।

चित्र में रेखाओं का प्रवाह, पुष्प व पत्तियों का अलंकरण चित्र के चारों ओर लयात्मक प्रभाव को दिखाता है। जो प्रेम और संगीतात्मकता की अनुभूति कराता है। चित्रकार ने वातावरण को केवल सजावटी न बनाकर भावों के विस्तार के रूप में प्रस्तुत किया है। यह चित्र केवल प्रेम का दृश्य नही, बल्कि आत्मा का परमात्मा से मिलन की भी प्रतीकात्मक व्याख्या प्रस्तुत करता है। "श्रीकृष्ण राधा संग वन में घूमते हुए" चित्र केवल एक धार्मिक दृश्य नही बल्कि प्रेम, भक्ति, प्रकृति और समर्पण भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का उत्कृष्ट कलात्मक वर्णन है, जो अर्की महल की समृद्ध चित्रकला परम्परा और सांस्कृतिक धरोहर का उदाहरण है।

चित्र संख्या (7) श्रीकृष्ण राधा संग वन में घूमते हुए

विश्लेषणात्मक अध्ययन

अर्की महल में कृष्ण लीला आधारित चित्रकला का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि इन चित्रों में धार्मिक विषयों के साथ-साथ सामाजिक, सांस्कृतिक और कलात्मक तत्वों का सुन्दर सामंजस्य दिखाई देता है। चित्रकारों ने कृष्ण की जीवन लीलाओं को केवल पौराणिक घटनाओं के रूप में प्रस्तुत न करके, उन्हें मानवीय भावनाओं और भक्ति चेतना से भी जोड़ा है। इन चित्रों में मुगल, राजस्थानी तथा पहाड़ी शैली के मिश्रित प्रभाव भी दिखाई देते हैं। चित्रों में कोमल रंग योजना, सूक्ष्म रेखांकन, प्राकृतिक परिवेश तथा भाव प्रधान आकृतियाँ स्पष्ट दिखाई देती हैं। चित्रों में लाल, हरे, पीले और नीले रंगों का सामंजस्य दृश्यों को जीवंत बनाता है। साथ ही मुगल और राजस्थानी शैली का प्रभाव भी इनमें देखा जा सकता है।

कृष्ण लीला के चित्रों में प्रेम, भक्ति, संरक्षण, करुणा और धर्म की स्थापना जैसे मूल्यों को प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया गया है। गोपियों संग कृष्ण और राधा-कृष्ण वन विहार जैसे चित्र आध्यात्मिक प्रेम को दर्शाते हैं, जबकि गोवर्धन धारक, बकासुर वध और कंस वध शक्ति और धर्म की

OPINION TODAY
National Bilingual (Hindi–English) Quarterly, Peer-Reviewed and Refereed Journal
Vol. 02, No. 02 (2026): April-June ISSN No. : 3108-2661

विजय के प्रतीक हैं। इस प्रकार अर्की महल की कृष्ण लीला चित्रकला केवल धार्मिक अभिव्यक्ति नही है, बल्कि यह तत्कालीन समाज, लोक संस्कृति और भारतीय कलात्मक परम्परा का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

निष्कर्ष (Conclusion)

अर्की महल में चित्रित कृष्ण लीलाएँ केवल धार्मिक विषय-वस्तु तक सीमित नही है, बल्कि वे तत्कालीन समाज, संस्कृति तथा लोकजीवन का भी दर्पण है। इन चित्रों में पहाड़ी शैली की कोमलता, भावात्मक अभिव्यक्ति तथा रंगों की सजीवता दिखाई देती है। कृष्ण लीलाओं के माध्यम से कलाकारों ने प्रेम, भक्ति, करुणा, धर्म और मानव मूल्यों के चित्रित किया है। यह चित्र आज भी भारतीय कला और संस्कृति की धरोहर के अमूल्य उदाहरण है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, ओ० पी०, (2004), भारतीय चित्रकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2004।
2. कुमार, रोहित, (2009), शोध निबन्ध सोलन जनपद के भित्ति चित्र एवं मूर्ति शिल्प-एक नान्दनिक विवेचन।
3. हांडा, ओ० सी० (1994),Wall Painting of Himachal Pradesh, Indus Publishing ,New delhi.
4. शर्मा, कैलाश चन्द, (2008), बाघल और अर्की के भित्ति चित्र।
5. वशिष्ठ, रेखा, (2023), अर्की की चित्रकला समकालीन संदर्भ में।
6. गोस्वामी, बी० एन० एवं फिशर, (2009), पहाड़ी मास्टर्स, उत्तरी भारत के दरबारी चित्रकार, नई दिल्ली वियोगी बुक्स, ISBN no. 978-81897338364।
7. चन्द्रा, एम० एवं खण्डावाला, के० (1969), पहाड़ी लघुचित्र, नई दिल्ली: ललित कला अकादमी, ISBN no. 8185822099।
8. गौतम और जोशी, हमारा सोलन, प्रकाशन सहगल प्रिन्ट एवं पैकर्स, सोलन, पृष्ठ संख्या 177